तिथि
5.5.2020

TOPIC SL. No.
टॉपिक क्रम सं० (51)

स्नातक प्रथम वर्ष
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
B.A Hindi (Hons.)
D1
पत्र - प्रथम - 1

लघुत्तरीय प्रश्न

प्र01 'सिद्ध साहित्य' के बारे में संक्षेप में विचार प्रकट कीजिए ?

उ01

सातवीं शताब्दी में अपभ्रंश का स्थान क्षेत्रीय बोलियाँ लेने लगी थी और इनमें धार्मिक साहित्य की रचना होने लगी थी। धार्मिक रचनाओं को साहित्य के अंतर्गत माना जाये या नहीं, इसी मतभेद के आधार पर हिन्दी का आदिकाल विवाद का विषय बन गया।

परवर्ती बौद्धों की एक शाखा वज्रयानी कहलाई। ये वज्रयानी बौद्ध वस्तुतः तांत्रिक साधक थे। इनका विश्वास लौकिक चमत्कारों में था और वे गुह्य साधना के पक्षधर थे। शंकराचार्य के प्रभाव के कारण ये वज्रयानी बौद्ध बंगाल और असम की ओर चले गये। इन साधकों ने अपने साधनामूलक सिद्धांतों को तत्कालीन जन भाषा व्याख्यायित किया। यह भाषा परवर्ती अपभ्रंश के अधिक निकट थी। कालांतर में यह भाषा अपभ्रंश से दूर हो गई और हिन्दी के

Scanned with CamScanner

प्राचीन पूर्वी प्रयोगों के निकट आ गई।

इन साधकों को सिद्ध कहा जाने लगा। ये शक्ति के उपासक थे। वे तंत्र-मंत्रों द्वारा सिद्धियाँ प्राप्त करते थे और उनके द्वारा जनता को चमत्कृत किया करते थे।

सर्वप्रथम राहुल सांकृत्यायन ने इन सिद्धों के साहित्य को प्रकाशित किया और चौरासी सिद्धों की एक परंपरा प्रस्तुत की। इन्होंने सर्वश्रेष्ठ कवि सरहपा को हिन्दी का प्रथम कवि माना। सिद्धों की रचनाएँ संभवतः हिन्दी के निकट हैं। इन कवियों में अधिकांश का रचना काल 8वीं शताब्दी के आसपास ठहरता है। 'दोहाकोश' सरहपा रचित सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ है।

सिद्धों की रचनाओं में रहस्यवाद का प्रमुख स्थान है। इनकी रचनाओं में गुरु-महिमा, समाज-सुधार, जीवन-दर्शन जैसे तत्व भी पाये जाते हैं।

सिद्ध-साहित्य में धर्म, दर्शन और बाह्याडंबर का विरोध है तथा तंत्र-साधना पर अधिक बल है। इनकी भाषा अर्धमागधी अपभ्रंश से प्रभावित है। मुख्य छंद हैं – दोहा, सोरठा, चौपाई, छप्पय आदि।

– डॉ० भारती प्रसाद
सह प्राचार्य, हिन्दी-विभाग
राम नारायण महाविद्यालय, पण्डौल
मधुबनी
मो० नं०- 9955839898

Scanned with CamScanner